CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/4/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने की शैली में परिवर्तन लाकर सोशल मीडिया आधुनिक युग का सर्वव्यापी पहलू बन गया है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यंत त्वरित बना दिया है और यह सभी आयु समूहों के लिए एक आसान माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, यूट्यूब, आदि उपयोगकर्ता को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करते हैं। इसका महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए एक प्रभावी माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा, व्यापार और यहाँ तक कि राजनीति में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यधिक तेज़ और सस्ता बना दिया है। इसके जरिए लोग घटनाओं का सीधा प्रसारण विश्व के किसी भी कोने से देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में तो इसने एक क्रांति सी ला दी है। छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। व्यावसायिक गतिविधियाँ-जैसे उत्पादों और सेवाओं का प्रचार करना, ग्राहकों से जुड़ना, विपणन अभियानों को तेज़ी से फैलाने में भी यह मदद करता है।

सोशल मीडिया जहाँ सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है वहीं समाज पर इसका दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहा है। लोग तनाव और अवसाद से प्रभावित हो रहे हैं, अकेलापन बढ़ रहा है, अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है। इसने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी ज़िंदगी के बारे में लिखना, अपनी आत्मीय तस्वीरें शेयर करना, चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहना बेचैनी को बढ़ा सकता है। आपको याद रखना चाहिए कि इस मंच पर आने वाले आपके आभासी मित्र, सच्चे मित्र या हितैषी नहीं होते। लोग आपकी उपस्थिति का लाभ उठाकर आपको धोखा-धड़ी का शिकार बना लेते हैं। 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं।

यद्यपि यह लोगों से जुड़ने, सूचना के प्रचार-प्रसार, समुदाय में अहम भूमिका निभा रहा है लेकिन इसके अति प्रयोग से बचना चाहिए।

[10 अंक]

1(i). निम्नलिखित में से सोशल मीडिया का प्रकार नहीं है : [1 अंक]

(A) इंस्टाग्राम

(B) व्हाट्सऐप

(C) ट्विटर

(D) फेसबुक

सही उत्तर: (B) व्हाट्सऐप

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के वस्तुनिष्ठ प्रश्न में दिए गए उदाहरणों से विकल्पों का मिलान किया जाता है।
- निषेधसूचक शब्द नहीं पर ध्यान देकर गद्यांश में उल्लिखित सूची से भिन्न विकल्प चुनना है।

चरण 1: गद्यांश की सूची पहचानना गद्यांश में सोशल मीडिया के उदाहरण के रूप में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन और यूट्यूब के नाम दिए गए हैं। प्रश्न के विकल्पों में आए इंस्टाग्राम, ट्विटर और फेसबुक इस सूची में स्पष्ट रूप से मौजूद हैं।

चरण 2: चारों विकल्पों की जाँच विकल्प (A), (C) और (D) गद्यांश में उल्लिखित हैं, इसलिए इन्हें नहीं चुना जाएगा। व्हाट्सऐप का नाम गद्यांश की सूची में नहीं है। अतः पाठ में दिए उदाहरणों के आधार पर अपेक्षित विकल्प (B) है। यह चयन गद्यांश की सूची के संदर्भ में है; सामान्य प्रयोग में व्हाट्सऐप भी सामाजिक संचार का माध्यम है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में उल्लिखित उदाहरणों के आधार पर सही विकल्प (B) व्हाट्सऐप है।

त्वरित सुझाव: नहीं वाले प्रश्न में पहले गद्यांश की सूची रेखांकित करें और फिर सभी विकल्प उससे मिलाएँ।

1(ii). सोशल मीडिया की लोकप्रियता का नकारात्मक प्रभाव है : [1 अंक]

(A) सूचनाओं का त्वरित प्रसारण

(B) दुनियाभर से जुड़ने का अवसर

(C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा

(D) व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान

सही उत्तर: (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा

हल:

अवधारणा:

- सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अंतर गद्यांश के कथनों से स्पष्ट होता है।
- आत्ममुग्धता का आशय अपने ही व्यक्तित्व और प्रदर्शन में अत्यधिक रुचि लेना है।

चरण 1: नकारात्मक प्रभाव पहचानना गद्यांश के दूसरे अनुच्छेद में सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव बताए गए हैं और स्पष्ट कहा गया है कि इसने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी ज़िंदगी और तस्वीरों को निरंतर साझा करना तथा प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा रखना इसी प्रवृत्ति से जुड़ा है।

चरण 2: विकल्पों को अलग करना आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा देना इसी आत्ममुग्धता का रूप है। इसके विपरीत विकल्प (A) में सूचना का तेज प्रसार, (B) में लोगों से जुड़ने का अवसर और (D) में व्यवसाय को सहायता दी गई है। गद्यांश में ये तीनों उपयोगी प्रभाव हैं, नकारात्मक प्रभाव नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा है।

त्वरित सुझाव: दुष्प्रभाव पूछे जाने पर तनाव, अकेलापन और आत्ममुग्धता वाले अनुच्छेद से प्रमाण चुनें।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है।

कारण : सामाजिक संरचना के सुदृढ़ीकरण और रचनात्मक क्षमता के प्रदर्शन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(B) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है।

(C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण को पहले अलग-अलग परखें, फिर उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध देखें।
- गद्यांश सोशल मीडिया के बढ़ते महत्त्व को संपर्क, सामाजिक सक्रियता और रचनात्मक अभिव्यक्ति से जोड़ता है।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश में स्पष्ट है कि सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता जा रहा है। शिक्षा, व्यापार और राजनीति में उसकी भूमिका बढ़ने के उदाहरण इस कथन को पुष्ट करते हैं। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता सोशल मीडिया लोगों को जुड़ने, सामाजिक रूप से सक्रिय रहने तथा अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने के अवसर देता है। समुदाय में उसकी अहम भूमिका भी कही गई है। इस संदर्भ में सामाजिक संबंधों के सुदृढ़ीकरण और रचनात्मक क्षमता के प्रदर्शन वाला कारण सही है।

चरण 3: व्याख्या और विकल्प की जाँच लोगों को जोड़ने और अभिव्यक्ति का अवसर देने की उपयोगिता ही उसके बढ़ते महत्त्व का कारण है। अत: कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) तथा (B) सत्यता का गलत निर्णय देते हैं और (C) इस व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्य सही होने पर भी जाँचें कि कारण वास्तव में कथन के क्यों का उत्तर देता है या नहीं।

1(iv). सोशल मीडिया से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अभिप्राय पूछे जाने पर शब्द के संदर्भगत अर्थ और उसके मुख्य कार्य को स्पष्ट करना चाहिए।
- गद्यांश में सोशल मीडिया संवाद, सूचना प्राप्ति और अपनी रचनात्मकता प्रस्तुत करने का माध्यम है।

चरण 1: मुख्य कार्य पहचानना गद्यांश के अनुसार सोशल मीडिया ने लोगों के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और स्वयं को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने की शैली बदली है। यह लोगों को जोड़ता है और सूचनाओं का तेज प्रसार संभव बनाता है।

चरण 2: अर्थ को उदाहरण से स्पष्ट करना फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे मंच इसके उदाहरण हैं। उपयोगकर्ता इनके माध्यम से अपनी बात, तस्वीरें और रचनात्मक सामग्री साझा करते हैं तथा सामाजिक रूप से सक्रिय रहते हैं। इसलिए इसका अभिप्राय केवल समाचार सुनना नहीं, बल्कि संपर्क और सहभागिता का माध्यम भी है।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया ऐसे माध्यमों का समूह है जिनके द्वारा लोग संवाद करते हैं, जानकारी प्राप्त व साझा करते हैं और अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित कर सामाजिक रूप से सक्रिय रहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में पहले मुख्य अर्थ लिखें, फिर गद्यांश से एक-दो उदाहरण देकर उसे स्पष्ट करें।

1(v). सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलुओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में दो सकारात्मक पहलू माँगे गए हैं, इसलिए दो स्पष्ट उपयोग और उनका संक्षिप्त स्पष्टीकरण देना है।
- गद्यांश सूचना के तेज तथा सस्ते प्रसार और शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता को विशेष महत्त्व देता है।

चरण 1: पहला सकारात्मक पहलू : सूचना का प्रसार सोशल मीडिया ने सूचनाओं का प्रसार अत्यंत तेज और सस्ता बना दिया है। इसकी सहायता से लोग विश्व के किसी भी कोने में घट रही घटनाओं का सीधा प्रसारण देख सकते हैं। इस तरह दूरस्थ घटनाओं की जानकारी आसानी से और शीघ्र मिलती है। यह लाभ गद्यांश के पहले अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से बताया गया है।

चरण 2: दूसरा सकारात्मक पहलू : शिक्षा में सहायता गद्यांश के अनुसार सोशल मीडिया ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति सी ला दी है और छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। जानकारी प्राप्त करने तथा साझा करने का आसान माध्यम होने से यह विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनता है। उत्तर में इसी शैक्षिक उपयोगिता को दूसरा स्वतंत्र सकारात्मक पहलू माना जाएगा। दोनों बिंदु सीधे गद्यांश के समर्थन पर आधारित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलू हैं : सूचनाओं का तेज और सस्ता प्रसार तथा शिक्षा और विद्यार्थियों को मिलने वाली उपयोगी सहायता।

त्वरित सुझाव: दो पहलू माँगे जाएँ तो एक ही लाभ को दो रूपों में न दोहराएँ; सूचना और शिक्षा जैसे अलग पक्ष चुनें।

1(vi). सोशल मीडिया पर 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। कैसे ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में अपेक्षा और मानसिक बेचैनी के बीच कारण-परिणाम का संबंध स्पष्ट करना है।
- उत्तर का आधार गद्यांश में वर्णित निरंतर उपस्थिति, आत्ममुग्धता, बेचैनी और अनिद्रा है।

चरण 1: प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा का प्रभाव जब व्यक्ति अपनी निजी बातें और तस्वीरें साझा करके लगातार लाइक तथा कमेंट की अपेक्षा करता है, तो उसका ध्यान दूसरों की प्रतिक्रियाओं पर टिका रहता है। वह बार-बार मंच पर उपस्थित रहता है और अपनी प्रस्तुति को लेकर अत्यधिक सजग हो जाता है। गद्यांश में इसी लगातार उपस्थिति को बेचैनी बढ़ाने वाला बताया गया है।

चरण 2: मानसिक लय बिगड़ने का अर्थ प्रतिक्रिया की लगातार प्रतीक्षा मन को सहज और शांत नहीं रहने देती। मनुष्य आत्ममुग्धता, तनाव तथा अकेलेपन से प्रभावित होता है और अनिद्रा की समस्या भी बढ़ती है। इस संदर्भ में मस्तिष्क की लय बिगड़ने का आशय मानसिक शांति और संतुलन का प्रभावित होना है। उत्तर के लिए गद्यांश से बाहर कोई शारीरिक प्रक्रिया या वैज्ञानिक आँकड़ा जोड़ना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष लाइक और कमेंट की निरंतर अपेक्षा व्यक्ति को प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा और बार-बार सोशल मीडिया देखने में उलझाती है। इससे बेचैनी, तनाव और अनिद्रा बढ़ते हैं तथा मानसिक शांति और संतुलन प्रभावित होते हैं।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में क्रम रखें : प्रतिक्रिया की अपेक्षा, निरंतर उपस्थिति, बेचैनी और मानसिक संतुलन पर प्रभाव।

1(vii). सोशल मीडिया की लत का खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों से क्या संबंध है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तर्कपूर्ण उत्तर में गद्यांश के निष्कर्ष को उसके बताए लक्षणों से जोड़कर समझाना चाहिए।
- सोशल मीडिया का उपयोग और उसकी लत अलग स्थितियाँ हैं; गद्यांश विशेष रूप से अति प्रयोग से बचाता है।

चरण 1: लत और जीवन-शैली का संबंध सोशल मीडिया की लत में व्यक्ति चौबीसों घंटे मंच पर उपस्थित रहने और दूसरों की प्रतिक्रियाएँ देखने में उलझ जाता है। गद्यांश के अनुसार इस अति प्रयोग से तनाव, अवसाद, अकेलापन और अनिद्रा बढ़ते हैं। अतः लत केवल मनोरंजन की आदत नहीं रहती, बल्कि मानसिक शांति और विश्राम को प्रभावित करने वाली असंतुलित जीवन-शैली से जुड़ जाती है।

चरण 2: गद्यांश के आधार पर तर्क देना अनिद्रा और मानसिक तनाव जैसे दुष्प्रभाव बताते हैं कि लगातार सोशल मीडिया पर सक्रिय रहना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इसी कारण गद्यांश में वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं। लेखक उपयोगिता स्वीकार करते हुए भी अति प्रयोग से बचने की सलाह देता है। इससे स्पष्ट है कि संबंध का आधार अनियंत्रित प्रयोग से पैदा होने वाला असंतुलन है।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया की लत असंतुलित जीवन-शैली से जुड़ी है, क्योंकि इसका अति प्रयोग तनाव, अवसाद, अकेलापन और अनिद्रा बढ़ाता है। इन्हीं स्वास्थ्यकारी जीवनचर्या को प्रभावित करने वाले दुष्प्रभावों के कारण इसे खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों से जोड़ा गया है।

त्वरित सुझाव: तर्कपूर्ण उत्तर में पहले लत की स्थिति बताएँ, फिर गद्यांश के लक्षण देकर निष्कर्ष से संबंध जोड़ें।

2. सबकी पीड़ा के साथ व्यथा अपने मन की जो जोड़ सके,
मुड़ सके जहाँ तक समय, उसे निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके।
युगपुरुष वही सारे समाज का विहित धर्मगुरु होता है,
सबके मन का जो अंधकार अपने प्रकाश से धोता है।
थे जहाँ सहस्रों वर्ष पूर्व, लगता है वहीं खड़े हैं हम,
है वृथा वर्ग उन गुफावासियों से कुछ बहुत बड़े हैं हम।
अनगढ़ पत्थर से लड़ो, लड़ो किटकिटा नखों से, दाँतों से
या लड़ो ऋक्ष के रोमगुच्छ-पूरित वज्रीकृत हाथों से।
या चढ़ विमान पर नर्म मुट्ठियों से गोलों की वृष्टि करो
आ जाय लक्ष्य में जो कोई, निष्ठुर हो सबके प्राण हरो।
ये तो साधन के भेद, किन्तु भावों में तत्त्व नया क्या है ?
क्या खुली प्रेम आँख अधिक ? भीतर कुछ बढ़ी दया क्या है ?
झर गई पूँछ, रोमान्त झरे, पशुता का झरना बाकी है,
बाहर-बाहर तन सँवर चुका, मन अभी सँवरना बाकी है। [8 अंक]

2(i). कवि को ऐसा क्यों लगता है कि हम सहस्रों वर्ष पूर्व जहाँ थे, आज भी वहीं हैं ? [1 अंक]

(A) धरती के भीतर का रहस्य जानना अभी भी बाकी है।
(B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।
(C) आज भी मनुष्य अपने नाखूनों का बढ़ना नहीं रोक पाया है।
(D) आज भी मनुष्य नख-दंत अवलम्बी है।

सही उत्तर: (B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में सभ्यता की प्रगति का मूल्यांकन मनुष्य के आंतरिक गुणों के आधार पर किया गया है।
- कवि हिंसा के बदलते साधनों और अपरिवर्तित क्रूरता में अंतर करता है।

चरण 1: पंक्ति का प्रमाण कवि स्पष्ट कहता है कि पशुता का झरना अभी बाकी है। पत्थर और नख-दंत के स्थान पर विमान तथा गोले आ गए हैं, पर दूसरों के प्राण लेने की निष्ठुरता बनी हुई है। इसी नैतिक स्थिरता के कारण उसे लगता है कि मनुष्य आज भी पुराने स्थान पर खड़ा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) सीधे इसी आंतरिक पशुता को व्यक्त करता है। (A) में धरती का रहस्य है, जिसका प्रसंग नहीं है। (C) नाखून बढ़ने की शारीरिक प्रक्रिया बताता है, जबकि प्रश्न नैतिक विकास का है। (D) गलत है, क्योंकि कवि स्वयं आधुनिक विमान और गोलों का उल्लेख करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।

त्वरित सुझाव: सभ्यता से जुड़े ऐसे प्रश्न में बाहरी साधनों के बजाय प्रेम, दया और हिंसा के उल्लेख को आधार बनाइए।

2(ii). 'ये तो साधन के भेद' – पंक्ति में 'साधन' से आशय है : [1 अंक]

(A) जीवनयापन के साधन

(B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र

(C) जीविकोपार्जन के माध्यम

(D) शत्रु को भयभीत करने के तरीके

सही उत्तर: (B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र

हल:

अवधारणा:

- किसी शब्द का आशय उसकी पूर्ववर्ती और अगली पंक्तियों से निर्धारित होता है।
- यहाँ साधनों का संबंध युद्ध और हिंसा के उपकरणों से है।

चरण 1: साधनों की पहचान इस पंक्ति से पहले पत्थर, नख, दाँत, वज्रीकृत हाथ, विमान और गोलों का उल्लेख है। ये सभी विरोधी पर आक्रमण करके उसे मारने के साधन हैं। इनके रूप अलग हैं, लेकिन हिंसक उद्देश्य एक ही है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना इसलिए (B) में दिए लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र प्रसंग के अनुकूल हैं। (A) और (C) जीवन चलाने या आजीविका कमाने से संबंधित हैं; कविता का यह अंश उस विषय पर नहीं है। (D) केवल भयभीत करने तक सीमित है, जबकि कवि प्राण हरने की वास्तविक हिंसा का उल्लेख करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र।

त्वरित सुझाव: साधन शब्द से ठीक पहले गिनाई गई वस्तुओं को पहचानकर उनका साझा उपयोग देखिए।

2(iii). 'बाहर-बाहर तन सँवर चुका' – से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) सौंदर्य प्रसाधनों से शारीरिक सुंदरता का बढ़ जाना

(B) शरीर के अनावश्यक अंगों का झड़ जाना

(C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना

(D) मनुष्य और पशुओं के बीच अंतर दृष्टिगत होना

सही उत्तर: (C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना

हल:

अवधारणा:

- कवि शारीरिक रूप के सँवरने की तुलना मन के अधूरे परिष्कार से करता है।
- पूर्ववर्ती पंक्ति में पूँछ और रोओं के झड़ने का उल्लेख बाहरी परिवर्तन को स्पष्ट करता है।

चरण 1: अभिप्राय समझना बाहर-बाहर तन सँवरने का अर्थ मनुष्य की शारीरिक बनावट का विकसित और सुंदर हो जाना है। कवि इसके बाद मन के सँवरने की आवश्यकता बताता है। इस विरोध से स्पष्ट है कि शरीर में परिवर्तन हुआ है, लेकिन प्रेम तथा दया का अपेक्षित विकास नहीं हुआ।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा (C) इस व्यापक शारीरिक परिवर्तन को व्यक्त करता है। (A) सौंदर्य प्रसाधनों की बात करता है, जिनका पद्यांश में उल्लेख नहीं है। (B) अंगों के झड़ने तक सीमित है; वह पूरी पंक्ति का अभिप्राय नहीं बताता। (D) पशुओं से दिखाई देने वाला अंतर बताता है, पर तन की बनावट के सँवरने का सीधा आशय (C) में है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना।

त्वरित सुझाव: इस पंक्ति को अगली पंक्ति के मन सँवरने से जोड़कर शरीर और मन का अंतर स्पष्ट कीजिए।

2(iv). 'भावों में तत्त्व नया क्या है' – पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य बाहरी उपलब्धियों और आंतरिक दुर्बलताओं के विरोध से उभरता है।
- कवि के प्रश्न में उत्तर निहित है: हिंसा की भावना में कोई नया मानवीय तत्त्व नहीं आया।

चरण 1: पुराने और नए साधन पहले मनुष्य पत्थरों और नख-दंत से लड़ता था, अब विमान से गोलों की वर्षा करता है। युद्ध के उपकरण आधुनिक हुए हैं और मारने की क्षमता बढ़ी है।

चरण 2: निहित व्यंग्य कवि मनुष्य की सभ्य होने की धारणा पर व्यंग्य करता है। साधन बदल जाने पर भी उसमें पहले जैसी क्रूरता है; प्रेम और दया नहीं बढ़े। इसलिए केवल तकनीकी प्रगति के आधार पर स्वयं को गुफावासियों से श्रेष्ठ समझना खोखला गर्व है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का व्यंग्य है कि आधुनिक हथियारों पर गर्व करने वाला मनुष्य भावनाओं में अभी भी हिंसक है; उसकी प्रगति भीतर तक नहीं पहुँची।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य स्पष्ट करते समय उपलब्धि और उसके बावजूद बनी कमी, दोनों को साथ रखिए।

2(v). 'मन अभी सँवरना बाकी है' – कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में सच्चे विकास की कसौटी प्रेम, दया और दूसरों की पीड़ा के प्रति संवेदना है।
- बाहरी रूप का विकास मनुष्य के नैतिक परिष्कार का प्रमाण नहीं बनता।

चरण 1: मन के असंवरे होने का कारण मनुष्य का शरीर और जीवन के साधन बदल गए हैं, पर उसके भीतर हिंसा, निष्ठुरता और दूसरों को नष्ट करने की प्रवृत्ति बनी हुई है। वह विमान से गोलों की वर्षा करके लक्ष्य में आने वाले लोगों के प्राण लेता है। इस व्यवहार में करुणा का अभाव दिखाई देता है। प्रेम और दया बढ़ने के बारे में कवि के प्रश्न भी इसी कमी को रेखांकित करते हैं।

चरण 2: मन सँवरने की आवश्यकता मन का सँवरना पशुता को छोड़कर मानवीय संवेदना अपनाना है। मनुष्य को दूसरों की पीड़ा अपनी पीड़ा के साथ जोड़नी होगी और उनके प्रति सहानुभूति रखनी होगी। तभी बाहरी विकास के साथ भीतर का विकास भी होगा। कवि इसलिए कहता है कि तन सँवर चुका है, किंतु मन का परिष्कार अभी बाकी है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने ऐसा इसलिए कहा है कि मनुष्य बाहरी रूप से विकसित होकर भी हिंसा और क्रूरता नहीं छोड़ पाया है। प्रेम, दया और परपीड़ा की संवेदना का विकास होने पर ही उसका मन सँवरेगा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले हिंसा का पाठगत उदाहरण दीजिए, फिर प्रेम और दया को मानसिक विकास की कसौटी बताइए।

2(vi). वज्रीकृत हाथों से या नर्म मुट्ठियों से लड़ना कवि की दृष्टि में एक समान क्यों है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कार्य का नैतिक मूल्य उसके साधन के साथ उसके उद्देश्य और भावना से तय होता है।
- कवि आदिम और आधुनिक युद्धों में समान रूप से मौजूद निष्ठुरता की आलोचना करता है।

चरण 1: साधनों में अंतर वज्रीकृत हाथ आदिम मनुष्य के कठोर शारीरिक बल से लड़ने का संकेत हैं। नर्म मुट्ठियों से लड़ना आधुनिक मनुष्य का विमान पर चढ़कर गोलों की वर्षा करना है। पहले शरीर की शक्ति सीधे काम आती थी; अब विकसित उपकरण विनाश का

काम करते हैं। दोनों स्थितियों में लड़ने का तरीका तथा उपयोग किए जाने वाले साधन अलग हैं।

चरण 2: भावना की समानता इन भेदों के बावजूद दोनों का उद्देश्य दूसरे पर प्रहार करना और उसके प्राण लेना है। आधुनिक साधनों के उपयोग से हृदय की हिंसा समाप्त नहीं होती। कवि पूछता है कि क्या भीतर दया बढ़ी है या प्रेम की आँख अधिक खुली है। उत्तर नकारात्मक है; इसलिए वह बाहरी परिष्कार को पर्याप्त नहीं मानता। क्रूरता और विनाश की प्रवृत्ति समान होने के कारण दोनों प्रकार का लड़ना उसकी दृष्टि में एक जैसा है।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों में साधन भिन्न हैं, किंतु हिंसा, क्रूरता और प्राण हरण की भावना समान है। प्रेम और दया का विकास न होने से कवि उन्हें एक समान मानता है।

त्वरित सुझाव: तुलना के उत्तर में पहले साधनों का भेद लिखिए और फिर हिंसक उद्देश्य की समानता स्थापित कीजिए।

3(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

दीपावली में घर की साज-सज्जा [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा दृश्य, व्यक्तिगत अनुभव और भावनाएँ सजीव भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। इस विषय में घर की सजावट के माध्यम से दीपावली के उल्लास का चित्रण अपेक्षित है।
- शीर्षक संक्षिप्त और आकर्षक हो। मुख्य लेख लगभग 120 शब्दों में रहे तथा सफाई, रंगोली, दीपों और पारिवारिक सहभागिता को एक क्रम में जोड़े।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति लेख का आरंभ त्योहार की तैयारी से करें। इसके बाद घर की सफाई, फूलों और रंगोली से सजावट तथा शाम के दीपों का दृश्य रखें। अंत में साज-सज्जा से मिलने वाले आत्मीय आनंद की अनुभूति आए। केवल सजावट के सामान की सूची देने के स्थान पर रंग, प्रकाश और सुगंध के बिंबों से दृश्य को जीवंत बनाया जाए। मुख्य लेख में छोटे, स्पष्ट वाक्य रखें और समयक्रम का पालन करें। शीर्षक विषय का संकेत दे, पर पूरा कथ्य न दोहराए। भाषा में भावात्मकता हो, किंतु घटनाएँ और प्रतिक्रियाएँ विश्वसनीय रहें। लेख समाप्त होने पर शब्द सीमा और वर्तनी की जाँच भी आवश्यक है।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख दीपों से मुसकराता घर

दीपावली आने से पहले ही हमारा घर उत्साह से भर उठता है। इस बार हमने तय किया कि सजावट सुंदर होने के साथ पर्यावरण के अनुकूल भी होगी। सुबह सबने मिलकर घर की सफाई की। माँ ने दरवाजे पर गेंदे के फूलों की बंदनवार लगाई और मैंने आँगन में रंगोली बनाई। छोटी बहन ने मिट्टी के दीयों पर रंग भरे। शाम ढली तो खिड़कियों, चौखट और छत पर रखे दीप जगमगा उठे। उनकी सुनहरी रोशनी में घर किसी सुंदर चित्र जैसा लग रहा था। रसोई से आती मिठाइयों की सुगंध इस सुंदरता को और बढ़ा रही थी। पड़ोसियों की प्रशंसा सुनकर मन खिल उठा। उस दिन लगा कि घर की असली साज-सज्जा परिवार के प्रेम और मिलकर काम करने में है।

चरण 3: निष्कर्ष इस लेख में सफाई से आरंभ होकर दीपों की जगमगाहट तक घर की साज-सज्जा का क्रमिक चित्रण है। अंतिम भाव पारिवारिक सहयोग को बाहरी सुंदरता से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: पहले लगभग 120 शब्दों का मुख्य लेख तैयार करें; फिर अनावश्यक विशेषण हटाकर दृश्य, अनुभव और समापन के बीच संबंध जाँचें।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

उस दिन जब अचानक धरती काँपने लगी [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभव आधारित रचनात्मक लेख में घटना का क्रम, वातावरण और मन:स्थिति महत्त्वपूर्ण होते हैं। अचानक धरती काँपने के विषय में आश्चर्य, भय, संयम और राहत के भाव स्वाभाविक ढंग से उभरने चाहिए।
- संक्षिप्त शीर्षक के साथ लगभग 120 शब्दों का लेख लिखें। घटना का आरंभ, लोगों की प्रतिक्रिया और अनुभव से मिली सीख को जोड़ें; अनावश्यक विवरण से बचें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आरंभ में सामान्य दिनचर्या का दृश्य रखें, जिससे अचानक आए परिवर्तन का प्रभाव स्पष्ट हो। हिलती वस्तुओं से भूकंप का अनुभव दिखाएँ, फिर भय और सुरक्षित स्थान की ओर जाने की प्रतिक्रिया आए। समापन में राहत और सावधानी का संदेश रखें। घटनाओं को एक ही व्यक्ति के अनुभव के रूप में क्रम से लिखने पर लेख में एकता बनी रहती है। मुख्य लेख में छोटे, स्पष्ट वाक्य रखें और समयक्रम का पालन करें। शीर्षक विषय का संकेत दे, पर पूरा कथ्य न दोहराए। भाषा में भावात्मकता हो, किंतु घटनाएँ और प्रतिक्रियाएँ विश्वसनीय रहें। लेख समाप्त होने पर शब्द सीमा और वर्तनी की जाँच भी आवश्यक है।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख जब धरती काँप उठी

उस दिन मैं दोपहर में अपने कमरे में पढ़ रहा था। अचानक मेज पर रखा पानी हिलने लगा और पंखा झूल उठा। पहले लगा कि चक्कर आ रहा है, पर माँ की आवाज सुनते ही समझ गया कि भूकंप आया है। डर से मेरा गला सूख गया। हम खिड़कियों और अलमारी से दूर होकर मजबूत मेज के नीचे बैठ गए। कुछ क्षण बहुत लंबे लग रहे थे। झटके थमने पर हम सीढ़ियों से नीचे उतरकर खुले मैदान में पहुँचे। वहाँ पड़ोसियों के चेहरों पर भी घबराहट थी। पिताजी ने सबको शांत रहने को कहा। धीरे-धीरे मन का भय कम हुआ। उस अनुभव ने सिखाया कि संकट में घबराहट के बजाय संयम और सही जानकारी हमारी सबसे बड़ी सहायता करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेख सामान्य दिनचर्या से शुरू होकर अचानक आए भूकंप, सुरक्षा के प्रयास और राहत के अनुभव तक पहुँचता है। इसका समापन संकट में संयम तथा सही जानकारी के महत्त्व को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: घटना के तीन चरण पहले लिखें—झटकों का अनुभव, तत्काल प्रतिक्रिया और बाद की अनुभूति; फिर इन्हें लगभग 120 शब्दों में जोड़ें।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने का उत्साह [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में अनुभव, कल्पना और संवेदना का संयोजन होता है। विषय के अनुरूप व्यक्तिगत दृष्टि लेख को मौलिक बनाती है।
- विश्वविद्यालय में प्रवेश का प्रसंग नए परिवेश, स्वतंत्रता, मित्रता और भविष्य की आशाओं से जुड़ा है। लेख में उत्साह के साथ जिम्मेदारी का बोध भी स्वाभाविक रूप से आ सकता है।

चरण 1: रूप और विषयवस्तु की योजना उपयुक्त शीर्षक के बाद प्रथम पुरुष में अनुभव प्रस्तुत करें। प्रवेश मिलने का क्षण, परिसर का पहला दृश्य, नए साथियों से परिचय और भविष्य के सपने क्रम से जोड़ें। घटनाओं की सूखी सूची देने के स्थान पर दृश्य, मनोभाव और छोटी अनुभूति से विषय को जीवंत बनाएँ। रचनात्मक लेख में पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: अभिव्यक्ति और शब्दसीमा लगभग 120 शब्दों में एक सुसंगत रचना लिखें। आरंभ उत्सुकता जगाए, मध्य में विश्वविद्यालय के वातावरण का अनुभव आए और अंत सीखने के संकल्प पर हो। सरल, प्रवाहपूर्ण भाषा रखें तथा अनावश्यक विवरण से बचें। नीचे दिया गया लेख इसी क्रम में प्रवेश के उत्साह और नई जिम्मेदारियों को प्रस्तुत करता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख विश्वविद्यालय की दहलीज पर

प्रवेश सूची में अपना नाम देखते ही मन खुशी से उछल पड़ा। लगा, वर्षों से सँजोया सपना आज सच हो गया है। अगले दिन विश्वविद्यालय पहुँचा तो विशाल पुस्तकालय, खुले मैदान और चहल-पहल से भरी गलियाँ मुझे नई दुनिया का निमंत्रण देती लगीं। विद्यालय की परिचित सीमाओं से बाहर यह स्वतंत्रता रोमांचित भी कर रही थी और थोड़ा डरा भी रही थी। कक्षा में नए साथियों से परिचय हुआ तो संकोच धीरे-धीरे मित्रता में बदल गया। अब मनपसंद विषय पढ़ने, वाद-विवाद में भाग लेने और पुस्तकालय में घंटों बिताने की कल्पना है। जानता हूँ, यहाँ अवसरों के साथ जिम्मेदारियाँ भी बढ़ेंगी। फिर भी विश्वास है कि मेहनत और जिज्ञासा के सहारे यह नया सफर मुझे बेहतर इंसान बनाएगा।

चरण 4: निष्कर्ष प्रवेश मिलने की खुशी से शुरू होकर नए परिवेश और सीखने के संकल्प तक पहुँचा यह लेख विश्वविद्यालय में प्रवेश के उत्साह को अभिव्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रवेश का एक जीवंत क्षण चुनें; फिर परिसर, नए मित्र और सीखने के संकल्प को जोड़कर लगभग 120 शब्दों में लेख पूरा करें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप क्या है ? इसके लिए समाचार लेखन की शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप समाचार लेखन है। इसका उद्देश्य महत्त्वपूर्ण घटना के सत्यापित तथ्य पाठक तक स्पष्टता से पहुँचाना है।
- उल्टा पिरामिड शैली में तथ्यों का क्रम उनके महत्त्व के अनुसार घटता जाता है। यह घटना के आरंभ से अंत तक चलने वाला अनिवार्य कालक्रम नहीं है।

चरण 1: समाचार और उसकी शैली पहचानें प्रश्न के दो पक्ष हैं: प्रसिद्ध पत्रकारीय रूप का नाम बताना और उसकी शैली का परिचय देना। समाचार लेखन में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना आरंभिक अनुच्छेद, अर्थात आमुख में आती है। उसके बाद घटना का विस्तार और सहायक तथ्य दिए जाते हैं। कम महत्त्व का विवरण अंत में रखने से पाठक को मुख्य बात तुरंत मिल जाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप समाचार लेखन है। इसकी उल्टा पिरामिड शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य आमुख में आते हैं। इसके बाद घटते महत्त्व के क्रम में विवरण, पृष्ठभूमि और अन्य जानकारियाँ दी जाती हैं; अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण बातें अंत में आती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली का आधार है: पहले सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूचना, फिर घटते महत्त्व के क्रम में उसका विस्तार।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल शैली का नाम न लिखें; आमुख में मुख्य तथ्य और उसके बाद घटते महत्त्व का क्रम अवश्य बताएँ।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

वे कौन-सी सुविधाएँ हैं जो मुद्रित माध्यमों के पाठकों को उपलब्ध हैं लेकिन रेडियो के श्रोताओं को नहीं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम दृश्य और स्थायी पाठ उपलब्ध कराता है। पाठक अपनी रुचि, सुविधा और पढ़ने की गति के अनुसार सामग्री ग्रहण कर सकता है।
- रेडियो श्रव्य माध्यम है। सामान्य प्रसारण में सूचना समय के साथ आगे बढ़ती है; श्रोता छपे पाठ की तरह मनचाहा अंश सामने रखकर दोबारा नहीं पढ़ सकता।

चरण 1: पाठक की सुविधाओं की तुलना करें प्रश्न पाठक और श्रोता की सुविधा का अंतर पूछता है। मुद्रित सामग्री में पाठक किसी कठिन अंश पर रुक सकता है, पीछे लौट सकता है और उसे समझकर आगे बढ़ सकता है। वह मनचाही खबर चुन सकता है तथा प्रति या कतरन सँभाल सकता है। रेडियो के सामान्य प्रसारण में गति प्रसारक तय करता है; श्रोता को सुनते समय ही अर्थ ग्रहण करना होता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर मुद्रित माध्यम का पाठक अपनी सुविधा और गति से पढ़ सकता है, कठिन अंश दोबारा देख सकता है तथा सामग्री चुनकर सुरक्षित रख सकता है। चित्र और तालिकाएँ भी देख सकता है। रेडियो श्रोता को प्रसारण की गति के साथ सुनना पड़ता है; ये सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी गति से पढ़ना, पुन: पढ़ना, सामग्री चुनना और सुरक्षित रखना तथा दृश्य सामग्री देखना मुद्रित माध्यम के पाठकों की प्रमुख सुविधाएँ हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना में अपनी गति, दोबारा पढ़ना, चयन और संग्रह याद रखें; इन्हें रेडियो के समयबद्ध श्रव्य प्रसारण से जोड़ें।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक पत्रकारिता के महत्त्व के बढ़ने का कारण स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक बदलावों और जनजीवन के संबंध को स्पष्ट करना इस प्रश्न का उद्देश्य है।
- संक्षिप्त उत्तर में कारण और उसके प्रभाव का स्पष्ट संबंध प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: वर्तमान आर्थिक परिवेश समझिए उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के कारण अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ है। बाजार, उद्योग, रोजगार और निवेश की गतिविधियाँ सामान्य नागरिक के जीवन से अधिक सीधे जुड़ गई हैं। इसलिए आर्थिक घटनाएँ केवल व्यापारियों की रुचि का विषय नहीं रही हैं।

चरण 2: पाठकों की सूचना संबंधी आवश्यकता जोड़िए लोग महँगाई, बचत, शेयर बाजार, बैंकिंग और सरकारी आर्थिक नीतियों के प्रभाव समझना चाहते हैं। आर्थिक पत्रकारिता जटिल आर्थिक सूचनाओं को सरल बनाकर इस आवश्यकता को पूरा करती है। उत्तर में आर्थिक परिवर्तन तथा पाठकीय रुचि, दोनों का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी हैं। आम लोगों की बचत, निवेश, रोजगार और बाजार में रुचि बढ़ी है। आर्थिक नीतियों तथा उतार-चढ़ाव का जनजीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है, इसलिए आर्थिक पत्रकारिता का महत्त्व बढ़ा है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय उदारीकरण के साथ आम पाठक की बचत, निवेश और रोजगार संबंधी सूचना की जरूरत अवश्य जोड़िए।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण करते समय किस तरह प्रभावशाली बनाया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथा को मंच पर जीवंत बनाने में संवादों की भूमिका समझना इस प्रश्न का आधार है।
- संक्षिप्त उत्तर में कारण और उसके प्रभाव का स्पष्ट संबंध प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: कथन को पात्रों की बातचीत में बदलिए कहानी में कथावाचक घटनाओं और मनोभावों का वर्णन कर सकता है। नाटक में इन्हें पात्रों की बातचीत तथा क्रिया से सामने लाना होता है। इसलिए संवाद पात्र की आयु, सामाजिक स्थिति, स्वभाव और उस समय की

मन:स्थिति के अनुरूप होने चाहिए।

चरण 2: मंचीय प्रभाव के साधन चुनिए लंबे वर्णनात्मक वाक्यों के स्थान पर संक्षिप्त, सहज और बोलने योग्य संवाद रखें। संवाद कथानक को आगे बढ़ाएँ तथा संघर्ष और संबंधों को उभारें। विराम, स्वर के उतार-चढ़ाव, हाव-भाव और आवश्यक मंच-निर्देश उनके भाव को दर्शकों तक पहुँचाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संवाद पात्रों के स्वभाव, परिस्थिति और मन:स्थिति के अनुकूल, संक्षिप्त, सहज तथा बोलचाल के होने चाहिए। वर्णन को बातचीत में बदलकर कथानक आगे बढ़ाना चाहिए। उचित विराम, स्वर के उतार-चढ़ाव, हाव-भाव और मंच-निर्देश संवादों को जीवंत तथा प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: संवाद का प्रभाव समझाते समय पात्रानुकूल भाषा, कथानक की गति और मंच पर बोलने की सहजता को एक साथ जोड़िए।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विचार करने और उसे व्यक्त करने की प्रक्रिया निबंध लेखन के परंपरागत विषयों में क्यों घटित नहीं हो पाती ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मौलिक चिंतन और तैयार सामग्री पर आधारित लेखन का अंतर इस प्रश्न का केंद्र है।
- संक्षिप्त उत्तर में कारण और उसके प्रभाव का स्पष्ट संबंध प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: परंपरागत विषयों की परिचितता समझिए निबंध के परंपरागत विषय बार-बार पढ़ाए और लिखवाए जाते हैं। विद्यार्थी उनके बारे में पहले से उपलब्ध विचारों, रूपरेखाओं और आदर्श निबंधों से परिचित हो जाते हैं। परिचित सामग्री को याद करके दोहराना स्वतंत्र ढंग से विषय पर सोचने की आवश्यकता घटा देता है।

चरण 2: मौलिक अभिव्यक्ति पर प्रभाव बताइए जब लेखक तैयार विचारों और वाक्यों पर निर्भर रहता है, तब अपने अनुभवों को टटोलने, नए संबंध खोजने तथा अभिव्यक्ति का अपना ढंग बनाने का अभ्यास नहीं हो पाता। प्रश्न में इसी प्रवृत्ति का कारण बताना है; यह नहीं कहना कि परिचित विषय पर मौलिक लेखन असंभव है।

चरण 3: निष्कर्ष परंपरागत निबंध-विषयों पर तैयार सामग्री और रटे-रटाए विचार आसानी से मिल जाते हैं। विद्यार्थी अपने अनुभवों से नए विचार विकसित करने के बजाय उन्हें दोहराते हैं। इस निर्भरता के कारण स्वतंत्र चिंतन और विचारों को अपने ढंग से व्यक्त करने की प्रक्रिया बाधित होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तैयार सामग्री पर निर्भरता को कारण और स्वतंत्र चिंतन तथा मौलिक अभिव्यक्ति में बाधा को उसका परिणाम बताइए।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आपके विद्यालय ने 'विश्व जल दिवस' के अवसर पर 'जल संरक्षण' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया। स्कूल-पत्रिका में प्रकाशन हेतु इस गोष्ठी का विवरण देते हुए दिव्य/दिव्या की ओर से एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट किसी संपन्न आयोजन का तथ्यपरक, क्रमबद्ध विवरण होती है। इसमें विषयानुकूल शीर्षक, रिपोर्टकर्ता का नाम तथा आयोजन का स्थान और तिथि दिए जाते हैं।
- स्कूल-पत्रिका के लिए गोष्ठी की रिपोर्ट में अवसर, विषय, प्रमुख गतिविधियाँ और निष्कर्ष शामिल होने चाहिए। भाषा औपचारिक रहे और घटनाओं का वर्णन भूतकाल में हो।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक में जल संरक्षण गोष्ठी का उल्लेख करें और दिव्या को रिपोर्टकर्ता बनाएँ। विवरण में

विश्व जल दिवस, विद्यालय में आयोजन, वक्ताओं के सुझाव और विद्यार्थियों के संकल्प का क्रम रखें। लगभग 80 शब्दों की सीमा में अनावश्यक सजावटी वर्णन से बचें। रिपोर्ट में व्यक्तिगत प्रशंसा के बजाय आयोजन से प्राप्त जागरूकता का उल्लेख करें। नीचे रिपोर्ट का एक पूरा नमूना दिया गया है।

चरण 2: प्रकाशन हेतु नमूना रिपोर्ट **जल संरक्षण पर गोष्ठी**

रिपोर्टकर्ता : दिव्या

नई दिल्ली, 22 मार्च, 2026।

विश्व जल दिवस के अवसर पर हमारे विद्यालय के सभागार में 'जल संरक्षण' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। प्रधानाचार्य ने जल के विवेकपूर्ण उपयोग की आवश्यकता बताई। विज्ञान शिक्षक ने वर्षाजल संचयन तथा घरेलू जल की बर्बादी रोकने के उपाय समझाए। विद्यार्थियों ने पोस्टरों और वक्तव्यों द्वारा जलसंकट के प्रति जागरूक किया। प्रश्नोत्तर सत्र में उपयोगी सुझाव सामने आए। अंत में सभी ने नल खुला न छोड़ने और जल बचाने का संकल्प लिया। गोष्ठी प्रेरणादायक रही।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत रिपोर्ट में शीर्षक, रिपोर्टकर्ता, स्थान-तिथि, आयोजन की गतिविधियाँ और परिणाम दिए गए हैं। यह विद्यालय की पत्रिका के लिए उपयुक्त संक्षिप्त, तथ्यपरक विवरण है।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट लिखते समय अवसर, स्थान, गतिविधियाँ और परिणाम इसी क्रम में रखें तथा अपना नाम रिपोर्टकर्ता के रूप में अवश्य दें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

विशेषीकृत रिपोर्टिंग बीट रिपोर्टिंग से भिन्न कैसे है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बीट रिपोर्टिंग में संवाददाता को नियमित समाचार-संकलन के लिए कोई निश्चित क्षेत्र, विभाग या संस्था सौंपी जाती है। वह वहाँ के स्रोतों से संपर्क रखकर नई घटनाओं की जानकारी जुटाता है।
- विशेषीकृत रिपोर्टिंग में किसी विषय का गहन अध्ययन और विशेषज्ञता आवश्यक है। रिपोर्टर घटना की पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव समझाता है; वह आँकड़ों और विशेषज्ञों के विचारों की सहायता भी लेता है।

चरण 1: अंतर का आधार समझें दोनों में विषयगत कार्य-विभाजन हो सकता है, पर अंतर रिपोर्टिंग की गहराई और अपेक्षित ज्ञान का है। बीट रिपोर्टर का नियमित संपर्क और समाचार-संकलन प्रमुख होता है। विशेषीकृत रिपोर्टर विषय की जटिलताओं को समझकर विश्लेषण करता है। इसलिए दोनों को पूरी तरह अलग, परस्पर असंबद्ध श्रेणियाँ नहीं मानना चाहिए; अनुभवी बीट रिपोर्टर विशेषज्ञ भी बन सकता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर बीट रिपोर्टिंग में पत्रकार किसी निर्धारित क्षेत्र या विभाग के दैनिक समाचार जुटाता है। इसमें नियमित संपर्क और घटनाओं की जानकारी प्रमुख होती है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग में किसी विषय का गहरा ज्ञान आवश्यक है। पत्रकार तथ्यों की पृष्ठभूमि, कारणों और प्रभावों का विश्लेषण करता है तथा विशेषज्ञों की सहायता लेता है। उदाहरणत: अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं की दैनिक खबर स्वास्थ्य बीट की रिपोर्ट हो सकती है; किसी महामारी के फैलाव, वैज्ञानिक कारणों और रोकथाम का अध्ययन करके लिखी गई विश्लेषणात्मक रिपोर्ट विशेषीकृत रिपोर्टिंग है।

चरण 3: निष्कर्ष बीट रिपोर्टिंग का आधार निर्धारित क्षेत्र से नियमित समाचार-संकलन है, जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय-विशेषज्ञता और गहरा विश्लेषण केंद्रीय हैं। स्वास्थ्य संबंधी उदाहरण यह अंतर स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय केवल विषयों की सूची न दें; नियमित खबर और उसी विषय की गहन विश्लेषणात्मक रिपोर्ट का जोड़ा बनाकर उदाहरण दें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक और रंगमंचीय नाटकों की समानताओं और भिन्नताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक की कथावस्तु पात्रों के संवादों, संघर्ष और घटनाओं के माध्यम से आगे बढ़ती है। रेडियो और रंगमंच दोनों में प्रभावी संवाद तथा अभिनय आवश्यक हैं।
- रेडियो श्रव्य माध्यम है, जबकि रंगमंच पर दर्शक अभिनय तथा दृश्य-सज्जा को देख भी सकते हैं। यह अंतर लेखन की भाषा और दृश्य-निर्माण को प्रभावित करता है।

चरण 1: तुलना की रूपरेखा उत्तर में पहले कथानक, पात्र, संवाद और नाटकीय संघर्ष जैसी समानताएँ रखनी चाहिए। उसके बाद माध्यम के अंतर से उत्पन्न भिन्नताएँ स्पष्ट करें। रेडियो में पात्रों की पहचान उनकी आवाज़ से बनती है, इसलिए संवाद स्पष्ट तथा बोलचाल के अनुकूल हों। मंच पर मौन, चेहरे के भाव और शरीर की मुद्रा भी अर्थ पहुँचा सकते हैं; रेडियो में वही सूचना उपयुक्त ध्वनि या सहज संवाद से उभारनी होती है। केवल उपकरण गिनाना पर्याप्त नहीं है; बताएँ कि उनके कारण दर्शक अथवा श्रोता तक नाटकीय स्थिति किस प्रकार पहुँचती है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर रेडियो नाटक और रंगमंचीय नाटक दोनों में कथानक, पात्र, संवाद, संघर्ष तथा अभिनय का महत्त्व होता है। दोनों का उद्देश्य नाटकीय घटनाओं से दर्शक या श्रोता को प्रभावित करना है। रंगमंचीय नाटक में वेशभूषा, प्रकाश, मंच-सज्जा और शारीरिक मुद्राएँ दृश्य को साकार करती हैं। रेडियो नाटक केवल श्रव्य होता है; इसलिए संवाद, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, संगीत और ध्वनि-प्रभावों से वातावरण बनाया जाता है। रेडियो में दृश्य श्रोता की कल्पना में उभरते हैं, इसलिए संवादों को परिस्थिति तथा गतिविधि का बोध भी कराना पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों नाट्यरूपों का आधार कथा, संवाद और अभिनय है; उनकी प्रमुख भिन्नता श्रव्य तथा दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति के साधनों में है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय पहले साझा नाट्यतत्त्व बताएँ, फिर रेडियो की ध्वनि और मंच के दृश्य साधनों का अंतर स्पष्ट करें।

---

6. हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंज़िल भी तो है दूर नहीं –
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ! [5 अंक]

6(i). बच्चों का नीड़ों से झाँकने का संभावित कारण है : [1 अंक]

(A) रात्रि का अंधकारयुक्त भयावह वातावरण
(B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन
(C) माता-पिता का सुबह से नीड़ों से बाहर होना
(D) नीड़ और आसपास के वातावरण में पसरा सन्नाटा

सही उत्तर: (B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बच्चों का नीड़ों से झाँकना माता-पिता की प्रतीक्षा का संकेत है। उत्तर के लिए "बच्चे प्रत्याशा में होंगे निर्णायक पंक्ति है।
- प्रत्याशा का अर्थ आशापूर्ण प्रतीक्षा है; बच्चों की यह प्रतीक्षा माता-पिता से मिलने वाले स्नेह, सुरक्षा और भोजन से जुड़ी है।

चरण 1: पंक्ति से कारण पहचानें बच्चे नीड़ों से झाँककर लौटती चिड़िया की राह देखते हैं। माता-पिता का लौटना उनके लिए भोजन और स्नेह मिलने का अवसर है। इसी आशा का ध्यान चिड़िया के परों में चंचलता भरता है। इसलिए प्रतीक्षा का सकारात्मक भाव विकल्प (B) से व्यक्त होता है।

चरण 2: अन्य विकल्प परखें विकल्प (A) में अंधकार का भय और (D) में सन्नाटा कारण बनाए गए हैं, जबकि काव्यांश इनका उल्लेख नहीं करता। विकल्प (C) बाहर रहने की स्थिति बताता है, पर बच्चों की आशापूर्ण प्रतीक्षा का उद्देश्य नहीं खोलता। उनकी मूल अपेक्षा माता-पिता से मिलने वाला स्नेह, सुरक्षा और भोजन है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन।

त्वरित सुझाव: "प्रत्याशा शब्द को केवल अनुपस्थिति से न जोड़ें; देखें कि लौटने वाले से बच्चे क्या मिलने की आशा करते हैं।

6(ii). दिन ढलते ही घर की ओर लौटती चिड़िया के परों में चंचलता है तो कवि के कदमों में : [1 अंक]

(A) शिथिलता

(B) व्याकुलता

(C) गतिशीलता

(D) भावुकता

सही उत्तर: (A) शिथिलता

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में चिड़िया और कवि की मन:स्थितियों का अंतर उनकी गति द्वारा व्यक्त हुआ है। मिलन की आशा गति बढ़ाती है, उसका अभाव उत्साह घटाता है।
- "यह प्रश्न शिथिल करता पद को कवि के कदमों की दशा सीधे बताता है।

चरण 1: चिड़िया और कवि की स्थिति समझें चिड़िया को अपने बच्चों की प्रतीक्षा का ध्यान है, इसलिए उसके परों में चंचलता आती है। कवि पूछता है कि उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल है और वह किसके लिए जल्दी चले। किसी प्रिय की प्रतीक्षा का भरोसा न होने से उसके कदम ढीले पड़ते हैं।

चरण 2: विकल्पों का पाठ से मिलान करें विकल्प (A) की शिथिलता का स्पष्ट प्रमाण "शिथिल करता पद को है। (B) व्याकुलता कवि की भावदशा से संबंधित हो सकती है, पर प्रश्न कदमों की दशा पूछता है। (C) गतिशीलता यहाँ अपेक्षित उत्साह के विपरीत है। (D) भावुकता भी कदमों की गति का सटीक शब्द नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : शिथिलता।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में "कदमों पर ध्यान दें और उत्तर के लिए "शिथिल करता पद को वाली पंक्ति से सीधा मिलान करें।

6(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : चिड़िया शीघ्रातिशीघ्र अपनी मंज़िल तक पहुँचना चाहती है।

कारण : गहराती संध्या उसे उसके बच्चों के लिए चिंतित कर रही है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(B) कारण सही है, लेकिन कथन ग़लत है।

(C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण वाले प्रश्न में दोनों की सत्यता तथा उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध अलग-अलग जाँचना आवश्यक है।
- चिड़िया के बच्चों की प्रतीक्षा का ध्यान उसकी वापसी की गति बढ़ाता है; ढलता दिन इस शीघ्रता की पृष्ठभूमि है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें "यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है से स्पष्ट है कि चिड़िया जल्दी अपने नीड़ तक पहुँचना चाहती है। अत: कथन सही है। उसकी मंज़िल वह नीड़ है जहाँ बच्चे उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें दिन ढल रहा है और बच्चे नीड़ों से झाँककर माता-पिता की राह देख रहे होंगे। इस स्थिति में चिड़िया को बच्चों की चिंता तथा उनसे मिलने की आतुरता है। इसलिए गहराती संध्या में बच्चों के प्रति उसकी चिंता बताने वाला कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प परखें बच्चों की प्रतीक्षा और उनके प्रति चिंता ही परों में चंचलता भरती है। अत: कारण बताता है कि चिड़िया जल्दी क्यों पहुँचती है। (A) दोनों को गलत और (B) कथन को गलत कहता है; ये पाठ के विरुद्ध हैं। (C) कारण का व्याख्यात्मक संबंध नकारता है, जो यहाँ मौजूद है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण सही होने के बाद भी जाँचें कि बच्चों की चिंता से ही चिड़िया की शीघ्रता का कारण स्पष्ट होता है।

6(iv). काव्यांश के मूल भाव को स्पष्ट करने वाला/वाले कथन है/हैं :

I. बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता।

II. गतिशील समय के साथ चलते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए।

III. अपनों से मिलन की आशा हमारे प्रयासों में तीव्रता लाती है।

उचित विकल्प का चयन कर लिखिए : [1 अंक]

(A) केवल III

(B) I और II

(C) II और III

(D) I, II और III

सही उत्तर: (C) II और III

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का मूल भाव घटनाओं और पात्रों की मन:स्थिति से पहचानना चाहिए। केवल समय से जुड़ा कोई सामान्य सत्य पर्याप्त आधार नहीं होता।
- ढलते दिन में मंज़िल की ओर बढ़ता पंथी और बच्चों से मिलने को आतुर चिड़िया लक्ष्य तथा अपनत्व की प्रेरणा व्यक्त करते हैं।

चरण 1: कथन II और III का आधार देखें पंथी रात होने से पहले मंज़िल तक पहुँचने के लिए थकान के बावजूद जल्दी चलता है। इससे गतिशील समय के साथ लक्ष्य की ओर प्रयास करने का भाव निकलता है। बच्चों की प्रत्याशा चिड़िया की गति बढ़ाती है; अत: अपनों से मिलने की आशा प्रयासों में तीव्रता लाती है। दोनों कथन काव्यस्थितियों से पुष्ट हैं।

चरण 2: कथन I और विकल्पों की सीमा जाँचें बीता समय लौटकर नहीं आता एक सामान्य सत्य है, पर प्रस्तुत अंश में बीते समय की वापसी अथवा उसके पछतावे की चर्चा नहीं है। इसलिए कथन I मूल भाव का उपयुक्त निरूपण नहीं करता। (A) लक्ष्य की ओर बढ़ने का भाव छोड़ देता है; (B) और (D) अप्रासंगिक कथन I जोड़ते हैं। (C) में दोनों समर्थित कथन हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : II और III।

त्वरित सुझाव: हर कथन को पंथी या चिड़िया की स्थिति से जोड़ें; समय के बारे में सामान्य सत्य को बिना पाठगत आधार शामिल न करें।

6(v). 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – कथन की आवृत्ति संकेत करती है : [1 अंक]

(A) समय की गतिशीलता की ओर

(B) काव्यांश के तुकान्त शब्दों की ओर

(C) संध्या के आगमन की ओर

(D) कवि की रचनात्मकता की ओर

सही उत्तर: (A) समय की गतिशीलता की ओर

हल:

अवधारणा:

- कविता में किसी पंक्ति की आवृत्ति उसके केंद्रीय भाव को उभारती है। "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है समय के निरंतर आगे बढ़ने का बोध कराती है।
- पंथी, चिड़िया और कवि की अलग-अलग स्थितियों के साथ वही पंक्ति लौटती है; समय की गति सभी के लिए बनी रहती है।

चरण 1: दोहराई गई पंक्ति का अर्थ समझें "जल्दी-जल्दी शब्द समय के तेजी से बीतने का अनुभव कराते हैं। दिन का ढलना रुकता नहीं है, चाहे कोई मिलन के उत्साह में चले या अकेलेपन से शिथिल पड़े। इस प्रकार पंक्ति की पुनरावृत्ति समय की निरंतर गतिशीलता पर बल

देती है।

चरण 2: अन्य विकल्प हटाएँ (B) तुकान्त शब्दों की ओर ध्यान ले जाता है, जबकि प्रश्न आवृत्ति के भावात्मक संकेत का है। (C) संध्या का आगमन दृश्य स्तर पर सही है, लेकिन बार-बार लौटती पंक्ति का व्यापक संकेत समय की गति है। (D) कवि की रचनात्मकता एक सामान्य टिप्पणी है, इस विशिष्ट कथन का अर्थ नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : समय की गतिशीलता की ओर।

त्वरित सुझाव: आवृत्ति का अर्थ पूछे जाने पर केवल दृश्य घटना न चुनें; देखें कि दोहराई गई पंक्ति किस केंद्रीय अनुभव पर बल देती है।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'उषा' कविता में कवि ने ग्रामीण अंचल की सुबह का मनोरम वर्णन किया है। आप अपने घर के आसपास होने वाली रात्रि के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति-वर्णन में दृश्य, ध्वनि और स्पर्श के अनुभवों से वातावरण सजीव बनता है।
- प्रश्न में उषा के आधार पर अपने परिवेश की रात्रि का वर्णन अपेक्षित है; सुबह के बिंबों को रात्रि का दृश्य नहीं बनाना चाहिए।

चरण 1: वर्णन की योजना रात्रि के वर्णन का केंद्र घर के आसपास का परिचित प्राकृतिक परिवेश रहेगा। चाँदनी, तारों, पेड़-पौधों और मंद हवा से दृश्य बनाया जा सकता है। झींगुर की आवाज़ तथा पत्तों की सरसराहट से शांत वातावरण में ध्वनि का अनुभव जोड़ा जाएगा। वर्णन में एक ही रात का संगत दृश्य रखें और लगभग 60 शब्दों में उसकी सुंदरता तथा उससे प्राप्त शांति व्यक्त करें। रंग और प्रकाश के वर्णन में चाँदनी का उजाला तथा पेड़ों की छाया साथ रखी गई है। फूलों की सुगंध घ्राण-अनुभव जोड़ती है। इस तरह केवल वस्तुओं की सूची नहीं बनती, बल्कि एक अनुभवपूर्ण दृश्य बनता है। अंतिम वाक्य उस दृश्य का मन पर पड़ने वाला प्रभाव बताता है।

चरण 2: आदर्श उत्तर मेरे घर के आसपास रात का प्राकृतिक सौंदर्य मन मोह लेता है। चाँदनी में पेड़ों की पत्तियाँ चाँदी-सी चमकती हैं। खुले आकाश में असंख्य तारे टिमटिमाते हैं। मंद हवा फूलों की सुगंध बिखेरती है। झींगुरों का स्वर और पत्तों की सरसराहट सन्नाटे को मधुर बनाते हैं। दिनभर की हलचल के बाद यह शांत वातावरण मन को सुख और ताजगी देता है।

चरण 3: निष्कर्ष रात्रि की चाँदनी, मंद हवा और प्राकृतिक ध्वनियों के सहारे अपने परिवेश का शांत, मनोरम चित्र प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: सुबह का वर्णन दोहराने के बजाय चाँदनी, तारे और रात्रि की ध्वनियों से अपना दृश्य बनाइए।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'बादल राग' कविता में 'तिरती है समीर-सागर पर अस्थिर सुख पर दुख की छाया' – पंक्ति से क्या आशय है ? कविता में किसके सुख-दुख की बात की जा रही है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल कविता में क्रांति तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक हैं।
- सुख-दुख का अर्थ वर्गीय स्थिति से जुड़ता है; क्रांति से संपन्न वर्ग भयभीत और शोषित वर्ग आशान्वित होता है।

चरण 1: पंक्ति का आशय समझिए हवा के समुद्र पर तैरती बादलों की छाया दृश्य स्तर पर अस्थिरता दिखाती है। इसी बिंब में कवि संपन्न वर्ग के सुख की अनिश्चितता प्रकट करते हैं। शोषण से संचित सुख स्थायी नहीं है; परिवर्तन की संभावना उसके ऊपर दुख और भय की छाया डाल देती है। इसलिए यहाँ केवल मौसम बदलने या किसी व्यक्ति की सामान्य उदासी का वर्णन पर्याप्त नहीं है। कविता में धनी

लोगों का आतंक और कृषक की अधीर पुकार इसी अंतर को पुष्ट करते हैं। संपन्न वर्ग अपने वैभव को बचाना चाहता है, इसलिए बादलों की गर्जना से डरता है। किसान शोषण से पीड़ित है, इसलिए उसी गर्जना में नई व्यवस्था का आश्वासन सुनता है। दोनों वर्गों की प्रतिक्रिया का यह विरोध पंक्ति के सामाजिक आशय को स्पष्ट करता है।

चरण 2: आदर्श उत्तर इस पंक्ति का आशय है कि शोषण पर टिका संपन्न वर्ग का सुख अस्थायी है। क्रांति के प्रतीक बादल उसके सुख पर विनाश और दुख की छाया डाल देते हैं। यहाँ पूँजीपति वर्ग के सुख-दुख की बात है, क्योंकि क्रांति से उसकी संपत्ति और प्रभुत्व को खतरा है। इसके विपरीत शोषित किसान बादलों का स्वागत करता है; उसे परिवर्तन में मुक्ति की आशा है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति में संपन्न शोषक वर्ग के अस्थिर सुख और क्रांति से उत्पन्न उसके भय की अभिव्यक्ति है।

त्वरित सुझाव: बादल को क्रांति का प्रतीक मानकर संपन्न वर्ग के भय और किसान की आशा का अंतर स्पष्ट कीजिए।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'छोटा मेरा खेत' कविता में खेती के रूपक द्वारा कवि ने किस कर्म की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है, वर्णन कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में काव्य-रचना की प्रक्रिया को खेती के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- कागज़ खेत है, भाव बीज है और कल्पना तथा शब्दों के विकास से कविता की फसल तैयार होती है।

चरण 1: रूपक के क्रम को पहचानिए कवि कागज़ के पन्ने को छोटा खेत कहते हैं। किसी क्षण उमड़ा भाव उसमें बीज की तरह पड़ता है। कल्पना के रसायन में उसका रूपांतरण होता है और शब्दों के अंकुर निकलते हैं। रचना के पूर्ण होने पर पाठकों को उसका रस मिलता है। खेती की फसल समाप्त हो सकती है, पर श्रेष्ठ कविता का आस्वाद बार-बार किया जा सकता है; उसका रस लगातार मिलता रहता है। भाव का बीज रचना में अपना अलग अस्तित्व खोकर संपूर्ण कविता का अंग बन जाता है। यह सृजन का रूपांतरण है, केवल शब्दों को जोड़ना नहीं। कवि का व्यक्तिगत अनुभव ऐसी रचना बनता है जिसका आनंद दूसरे भी ले सकते हैं। रस की अक्षयता से साहित्य की दीर्घजीविता और पाठक के बार-बार समृद्ध होने की विशेषता सामने आती है।

चरण 2: आदर्श उत्तर कवि ने खेती के रूपक से कविता रचने की प्रक्रिया स्पष्ट की है। कागज़ का पन्ना खेत है, जिसमें अनुभूति का बीज पड़ता है। कल्पना उसे विकसित करती है और शब्दों के अंकुर, पत्ते तथा फूल निकलते हैं। इस प्रकार भावपूर्ण कविता तैयार होती है। उसकी रस-फसल सामान्य फसल से भिन्न है; पाठक जितना उसका आस्वाद लेते हैं, उतना ही वह अक्षय बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष खेती का पूरा रूपक अनुभूति से कविता बनने और उसके अक्षय रस के आस्वादन की प्रक्रिया स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: खेत–कागज़, बीज–भाव, विकास–कल्पना और फसल–कविता का क्रम बनाकर उत्तर लिखिए।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बात सीधी थी पर' कविता से उद्धृत 'भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई' – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता अभिव्यक्ति में सहजता और कथ्य की स्पष्टता का महत्त्व बताती है।
- भाषा का अनावश्यक प्रदर्शन सरल बात को उलझा सकता है और उसके मूल अर्थ को दबा सकता है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ समझिए कवि के पास कहने के लिए एक सरल और स्पष्ट बात थी। उसे विशेष ढंग से प्रभावशाली बनाने की इच्छा में वे भाषा को अनावश्यक रूप से पेचीदा करने लगे। शब्दों की सजावट और प्रयोग का दबाव बढ़ने से कथ्य की सहजता खो गई।

टेढ़ा फँसना इसी अभिव्यक्ति-संकट का बिंब है। यहाँ भाषा को निरर्थक नहीं कहा गया है; उसके असहज और दिखावटी प्रयोग पर प्रश्न उठाया गया है।

चरण 2: आदर्श उत्तर इस पंक्ति का अभिप्राय है कि कवि की बात सरल थी, किंतु उसे प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को अनावश्यक रूप से सजाने-सँवारने पर वह उलझ गई। शब्दों के दिखावे में मूल भाव दब गया और बात की सहजता तथा स्पष्टता नष्ट हो गई।

चरण 3: निष्कर्ष अनावश्यक भाषायी चमत्कार ने सीधी बात को जटिल बना दिया और उसकी सहज अभिव्यक्ति बाधित हुई।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सरल कथ्य, अनावश्यक भाषायी सजावट और अर्थ की अस्पष्टता का संबंध स्पष्ट कीजिए।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग के राम अवतारी पुरुष न होकर एक सामान्य मानव थे, उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के इस प्रसंग में राम की मानवीय करुणा, भ्रातृप्रेम और असहायता प्रकट होती है।
- चरित्र-चित्रण में कथन के साथ प्रसंग का ठोस उदाहरण देना चाहिए; राम का विलाप उनके सामान्य मनुष्य जैसे दुख को स्पष्ट करता है।

चरण 1: प्रसंग का आधार लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम अपने अवतारी सामर्थ्य का प्रदर्शन नहीं करते। वे प्रिय भाई को खो देने की आशंका से व्याकुल होते हैं और उनके स्नेह तथा सेवा को याद करके विलाप करते हैं। इससे उनकी गहरी संवेदनशीलता और आत्मीय संबंधों के प्रति लगाव व्यक्त होता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम सामान्य मनुष्य की तरह व्याकुल होकर रोते हैं। वे कहते हैं कि यदि वन में भाई का वियोग जानता तो पिता की आज्ञा न मानता। भाई के बिना जीवन निरर्थक लगना उनकी मानवीय असहायता और भ्रातृप्रेम दर्शाता है।

चरण 3: निष्कर्ष राम का शोक, पश्चात्ताप और भाई के प्रति मोह इस प्रसंग में उनके सामान्य मानवीय रूप को सामने लाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल दुखी होना न लिखें; पिता की आज्ञा न मानने वाले कथन से उस दुख का प्रमाण भी दें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बगुलों के पंख' कविता के आधार पर नभ में पाँती-बँधे उड़ते बगुलों के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में आकाश में उड़ते सफेद बगुलों का दृश्यात्मक सौंदर्य उभरता है।
- काले बादलों और उजले पंखों का रंग-विरोध तथा माला की उपमा दृश्य को आकर्षक बनाते हैं।

चरण 1: बिंब और प्रभाव पहचानना कवि काले बादलों से भरे आकाश की पृष्ठभूमि में पंक्तिबद्ध सफेद बगुलों को देखता है। उनके पंखों का उजाला और व्यवस्थित उड़ान मिलकर सुंदर दृश्य बनाते हैं। इस प्रकार दृश्य में गति, रंग और सामूहिक लय का सुंदर मेल दिखाई देता है। आकाश की पृष्ठभूमि पंखों की उज्ज्वलता को विशेष रूप से उभारती है। यह सौंदर्य कवि को बाँध लेता है; वह उससे अपनी दृष्टि हटा नहीं पाता।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बाँधकर उड़ते बगुलों के सफेद पंख अत्यंत सुंदर लगते हैं। वे मानो कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की उजली माला हों। उनका सम्मोहक सौंदर्य कवि का मन चुरा लेता है और उसे बाँध लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष काले मेघों के बीच उजले बगुलों की पंक्ति माला जैसी लगती है; उसका सौंदर्य कवि को सम्मोहित करता है।

त्वरित सुझाव: पहले काले बादलों और सफेद पंखों का रंग-विरोध लिखें, फिर उजली माला की उपमा और कवि पर प्रभाव जोड़ें।

---

9. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे। [5 अंक]

9(i). 'रात्रि की विभीषिका' से अभिप्राय है : [1 अंक]

(A) रात्रि का सन्नाटा

(B) रात्रि का भयावहपन

(C) रात्रि का अंधकार

(D) रात्रि की स्पंदनहीनता

सही उत्तर: (B) रात्रि का भयावहपन

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए हुए गद्यांश के शब्द और उनका प्रसंगगत अर्थ है।
- ढोलक का प्रभाव मनोबल और चेतना पर है; उसे रोग मिटाने की वास्तविक चिकित्सा-शक्ति नहीं बताया गया है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण विभीषिका का अर्थ भय उत्पन्न करने वाली भयानक स्थिति है। महामारी और मृत्यु की आशंका रात के भयावहपन को और तीव्र करती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) सन्नाटा और (C) अंधकार रात के गुण हैं, किंतु वे विभीषिका का पूरा अर्थ नहीं बताते। (D) स्पंदनहीनता निश्चलता है; यहाँ मुख्य भाव भय है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है — रात्रि का भयावहपन।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के स्पष्ट कथन से विकल्प मिलाएँ और मानसिक साहस को बीमारी या मृत्यु के वास्तविक निवारण से अलग रखें।

9(ii). रात्रि की विभीषिका को गाँव में कौन चुनौती देता था ? [1 अंक]

(A) जंगली जानवरों की आवाज़

(B) रात्रि का सूनापन

(C) पहलवान के लड़के

(D) पहलवान की ढोलक

सही उत्तर: (D) पहलवान की ढोलक

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए हुए गद्यांश के शब्द और उनका प्रसंगगत अर्थ है।
- ढोलक का प्रभाव मनोबल और चेतना पर है; उसे रोग मिटाने की वास्तविक चिकित्सा-शक्ति नहीं बताया गया है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण गद्यांश का आरंभ स्पष्ट कहता है कि रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ललकारती थी। उसकी ध्वनि निराश ग्रामीणों को साहस देती थी।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) जंगली जानवरों की आवाज का ऐसा उल्लेख नहीं है। (B) सूनापन चुनौती देने वाला नहीं है। (C) पहलवान के लड़कों को इस कार्य का कर्ता नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है — पहलवान की ढोलक।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के स्पष्ट कथन से विकल्प मिलाएँ और मानसिक साहस को बीमारी या मृत्यु के वास्तविक निवारण से अलग रखें।

9(iii). ढोलक की आवाज़ का गाँववालों पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में असत्य कथन है : [1 अंक]

(A) नसों में बिजली दौड़ जाती थी।

(B) उनमें संजीवनी की शक्ति भरती थी।

(C) मृत्यु का सामना करने की शक्ति देती थी।

(D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।

सही उत्तर: (D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए हुए गद्यांश के शब्द और उनका प्रसंगगत अर्थ है।
- ढोलक का प्रभाव मनोबल और चेतना पर है; उसे रोग मिटाने की वास्तविक चिकित्सा-शक्ति नहीं बताया गया है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण लेखक स्पष्ट करता है कि ढोलक न बुखार हटा सकती थी, न महामारी रोक सकती थी। इसलिए वह मृत्यु को पराजित करने की वास्तविक ताकत नहीं देती थी।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) नसों में बिजली दौड़ना उत्साह का रूपक है। (B) संजीवनी शक्ति भरना और (C) मृत्यु का सामना करने का साहस मिलना गद्यांश द्वारा समर्थित हैं; ये सत्य कथन हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है — मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के स्पष्ट कथन से विकल्प मिलाएँ और मानसिक साहस को बीमारी या मृत्यु के वास्तविक निवारण से अलग रखें।

9(iv). गद्यांश के अनुसार गाँववालों की दीन-हीन स्थिति का प्रमुख कारण था : [1 अंक]

(A) निर्धनता

(B) अतिवृष्टि

(C) संक्रामक रोग

(D) साधनहीनता

सही उत्तर: (C) संक्रामक रोग

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए हुए गद्यांश के शब्द और उनका प्रसंगगत अर्थ है।
- ढोलक का प्रभाव मनोबल और चेतना पर है; उसे रोग मिटाने की वास्तविक चिकित्सा-शक्ति नहीं बताया गया है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण गद्यांश में बुखार और महामारी की सर्वनाश शक्ति का उल्लेख है। ग्रामीण रोगग्रस्त होकर अर्द्धमृत और शक्तिहीन बने हुए थे; मुख्य कारण संक्रामक रोग था।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) निर्धनता और (D) साधनहीनता उपचार न मिलने की परिस्थितियाँ समझाती हैं, किंतु यहाँ संकट का प्रमुख कारण महामारी है। (B) अतिवृष्टि का उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है — संक्रामक रोग।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के स्पष्ट कथन से विकल्प मिलाएँ और मानसिक साहस को बीमारी या मृत्यु के वास्तविक निवारण से अलग रखें।

9(v). 'बिजली दौड़ जाती थी' – का आशय है : [1 अंक]

(A) वायु का प्रवाह होने लगता था

(B) रक्त का संचार होने लगता था

(C) बिजली का प्रवाह होने लगता था

(D) चेतना का संचार हो जाता था

सही उत्तर: (D) चेतना का संचार हो जाता था

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए हुए गद्यांश के शब्द और उनका प्रसंगगत अर्थ है।
- ढोलक का प्रभाव मनोबल और चेतना पर है; उसे रोग मिटाने की वास्तविक चिकित्सा-शक्ति नहीं बताया गया है।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण शक्तिहीन आँखों और स्पंदनहीन स्नायुओं के संदर्भ में बिजली दौड़ना रूपक है। ढोलक सुनते ही निराश ग्रामीणों में चेतना, उत्साह और साहस जाग उठते थे।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) वायु का प्रवाह और (C) बिजली का वास्तविक प्रवाह प्रसंग से असंबद्ध हैं। (B) रक्त-संचार को शारीरिक अर्थ में लेना उचित नहीं; लेखक मानसिक स्फूर्ति का प्रभाव बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है — चेतना का संचार हो जाता था।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के स्पष्ट कथन से विकल्प मिलाएँ और मानसिक साहस को बीमारी या मृत्यु के वास्तविक निवारण से अलग रखें।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'भक्तिन' पाठ में वर्णित किन्हीं तीन समस्याओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा का संस्मरण भक्तिन के जीवन के माध्यम से ग्रामीण समाज में स्त्री की उपेक्षा, आर्थिक शोषण और अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था को उजागर करता है।
- उत्तर में तीन अलग समस्याओं को पाठ की घटनाओं से जोड़ना चाहिए। केवल भक्तिन के स्वभाव का वर्णन करना प्रश्न का उत्तर नहीं होगा।

चरण 1: तीन समस्याएँ और उनके प्रसंग पहली समस्या पुत्र और पुत्री में भेदभाव है। भक्तिन की बेटियाँ होने के कारण ससुराल में उसे और उसकी बेटियों को उपेक्षा तथा अधिक श्रम सहना पड़ा। दूसरी समस्या आर्थिक शोषण है। लगान न दे पाने पर जमींदार ने उसे धूप में खड़ा रखकर अपमानित किया। तीसरी समस्या पंचायत का पक्षपातपूर्ण न्याय है। भक्तिन की विधवा बेटी के कमरे में घुसे युवक के

मामले में पंचायत ने बेटी की इच्छा का सम्मान नहीं किया।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर 'भक्तिन' में स्त्री-भेदभाव, आर्थिक शोषण और अन्यायपूर्ण पंचायत की समस्याएँ हैं। बेटियाँ होने के कारण भक्तिन तथा उसकी बेटियाँ ससुराल में उपेक्षित थीं। लगान न चुका पाने पर जमींदार ने उसे धूप में खड़ा करके अपमानित किया। उसकी विधवा बेटी के कमरे में जबरन घुसे युवक के मामले में पंचायत ने बेटी की इच्छा के विरुद्ध विवाह का निर्णय दिया।

चरण 3: निष्कर्ष इन प्रसंगों में भक्तिन का व्यक्तिगत संघर्ष समाज में व्याप्त लैंगिक, आर्थिक और सामाजिक अन्याय का प्रतिनिधि बन जाता है।

त्वरित सुझाव: तीन समस्याओं के साथ तीन अलग घटनाएँ जोड़ें; एक ही भेदभाव को अलग-अलग नाम देकर दोहराने से बचें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि 'पर्चेजिंग पावर' से क्या अभिप्राय है ? क्या इसका उपयोग सकारात्मक कार्यों के लिए भी किया जा सकता है ? उदाहरण सहित लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्चेजिंग पावर का अर्थ क्रय-शक्ति है, अर्थात धन के बल पर वस्तुएँ खरीद सकने की क्षमता। पाठ में केवल सामर्थ्य दिखाने के लिए की गई खरीदारी की आलोचना है।
- क्रय-शक्ति का विवेकपूर्ण प्रयोग आवश्यकताओं की पूर्ति करता है; उसका प्रदर्शन अनावश्यक संचय और बाज़ार के आकर्षण में फँसने का कारण बनता है।

चरण 1: अर्थ और उपयोग में अंतर जेब में धन होना और मन में वास्तविक आवश्यकता होना अलग बातें हैं। लेखक दिखाते हैं कि पैसे की ताकत का प्रदर्शन मनुष्य को ऐसी वस्तुएँ खरीदने के लिए उकसा सकता है जिनकी उसे आवश्यकता नहीं। इसलिए क्रय-शक्ति का होना अपने-आप में दोष नहीं है; उसका उद्देश्य महत्त्वपूर्ण है। जरूरत का सामान खरीदना, परिवार की आवश्यकताएँ पूरी करना और दूसरों की सहायता करना इसके सकारात्मक प्रयोग हैं। सहायता का उदाहरण इस विचार का व्यावहारिक विस्तार है, पाठ की कोई अलग घटना नहीं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर 'पर्चेजिंग पावर' का अभिप्राय व्यक्ति की क्रय-शक्ति, अर्थात धन के आधार पर वस्तुएँ खरीदने की क्षमता है। 'बाज़ार दर्शन' में इसके प्रदर्शन से अनावश्यक खरीदारी बढ़ती है। इसका सकारात्मक उपयोग संभव है, यदि खरीद आवश्यकता और विवेक से हो। जैसे जरूरतमंद बच्चों के लिए पुस्तकें खरीदना या परिवार के लिए आवश्यक अन्न लेना धन को उपयोगी और सार्थक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रय-शक्ति का सकारात्मक मूल्य उसकी मात्रा से अधिक उसके विवेकपूर्ण और उपयोगी प्रयोग पर निर्भर है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद अपना स्पष्ट मत लिखें और एक ठोस उदाहरण दें; धन की निंदा को पाठ का संदेश न बनाएँ।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'शिरीष के फूल' पाठ में शिरीष के नए और पुराने फूलों द्वारा जीवन के किस सत्य को उजागर किया गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के माध्यम से परिवर्तन, अनासक्ति और जीवन की निरंतर गतिशीलता का संदेश देते हैं।
- प्रश्न में नए और पुराने फूलों का संकेत है; पाठ में पुराने के जमे रहने का विशेष चित्र शिरीष के सूखे फलों से आता है। उत्तर का केंद्र पुरातन की जड़ता और नवीन जीवन का आगमन है।

चरण 1: पाठ का प्रतीक और जीवन-सत्य शिरीष के पुराने सूखे फल वसंत में भी डालियों पर खड़खड़ाते रहते हैं और नए फल आने पर हटते हैं। लेखक इस प्रसंग से उन लोगों की जड़ता पर व्यंग्य करते हैं जो समय बदलने पर भी अपना स्थान छोड़ना नहीं चाहते। नए का आगमन जीवन का स्वाभाविक क्रम है। इसलिए पुराने को पकड़कर स्थिर रहना जीवन का नियम नहीं; बदलती परिस्थितियों को स्वीकार करना और नई पीढ़ी को अवसर देना आवश्यक है। लेखक का संकेत यह भी है कि सत्ता या प्रतिष्ठा से चिपके रहने पर व्यक्ति समय की गति को नहीं रोक सकता।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर शिरीष के नए-पुराने रूप जीवन में परिवर्तन की अनिवार्यता बताते हैं। पाठ में पुराने सूखे फल डालियों से चिपके रहते हैं और नए फल उन्हें हटाते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग पुरानी स्थिति छोड़ना नहीं चाहते, किंतु नवीनता अंततः स्थान बनाती है। जीवन गतिशील है; जड़ मोह छोड़कर परिवर्तन स्वीकार करना और नई पीढ़ी को अवसर देना ही उसका सत्य है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन में नवीनता आती रहती है; जड़ आसक्ति के स्थान पर परिवर्तन को सहजता से स्वीकार करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पुराने के चिपके रहने और नए के आने का संबंध स्पष्ट करें; पाठ के उदाहरण में सूखे फलों का सही उल्लेख रखें।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ में मेंढक मंडली पर पानी फेंके जाने को 'पानी की बुवाई' कहा गया है। इस विषय में आपकी क्या राय है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के पाठ में जीजी पानी देने को बीज बोने जैसी त्यागपूर्ण क्रिया मानती हैं। यह लोकविश्वास और लेखक की तर्कशील दृष्टि का संवाद है।
- उत्तर में जीजी की भावना का सम्मान करते हुए अपनी राय स्पष्ट करनी है। आस्था के प्रतीक को वर्षा का वैज्ञानिक कारण नहीं मानना चाहिए।

चरण 1: उपमा का आशय और अपनी राय जैसे किसान अधिक फसल पाने की आशा से कुछ बीज धरती को देता है, वैसे ही जीजी वर्षा की आशा में थोड़ा पानी देने को पानी की बुवाई कहती हैं। इसमें त्याग, उदारता और सामूहिक आशा की भावना है। किंतु पानी फेंकने से वर्षा होने का प्रत्यक्ष वैज्ञानिक संबंध नहीं बनता। सूखे में जल का संरक्षण करना आवश्यक है; लोकभावना की उपयोगिता और जल की वास्तविक बचत को साथ समझना चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर जीजी थोड़ा पानी देकर अधिक वर्षा की आशा को 'पानी की बुवाई' कहती हैं। इसमें त्याग और लोकविश्वास की भावना है। मेरे विचार में यह सुंदर प्रतीक है, पर वर्षा का वैज्ञानिक उपाय नहीं; सूखे में जल-संरक्षण अधिक उपयोगी है।

चरण 3: निष्कर्ष पानी की बुवाई को त्याग का प्रतीक समझा जा सकता है; व्यवहार में जल-संरक्षण को प्राथमिकता देनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले जीजी की उपमा समझाएँ, फिर अपना मत दें; भावना और वर्षा के वैज्ञानिक कारण को आपस में न मिलाएँ।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'भक्तिन' पाठ में महादेवी जी ने भक्तिन और अपने संबंधों की तुलना किससे और क्यों की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में लेखिका और भक्तिन का संबंध आर्थिक लेन-देन से ऊपर उठकर आत्मीय सहचर्य बन जाता है।
- तुलना समझाते समय घर के प्राकृतिक परिवेश और भक्तिन की अनिवार्य उपस्थिति का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: तुलना का आधार समझिए महादेवी जी के लिए भक्तिन केवल वेतन पर काम करने वाली नौकरानी नहीं है। वह उनके भोजन, दिनचर्या, सुविधा और सुरक्षा की चिंता करती है तथा उनके जीवन के साथ स्वाभाविक रूप से जुड़ गई है। इसलिए संबंध को केवल स्वामिनी और सेविका की सीमित परिभाषा में बाँधना उपयुक्त नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महादेवी जी ने भक्तिन को सेविका मानने की तुलना घर में आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले तथा आँगन के गुलाब और आम को सेवक मानने से की है। भक्तिन उनके जीवन का स्वाभाविक, आत्मीय और अभिन्न अंग है; उनका संबंध स्वामिनी-सेविका का नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन से लेखिका का संबंध घर के प्राकृतिक परिवेश जैसा सहज, आत्मीय और अविभाज्य है।

त्वरित सुझाव: तुलना में अँधेरा-उजाला और गुलाब-आम दोनों उदाहरण लिखकर उनके पीछे का आत्मीयता का भाव स्पष्ट कीजिए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर लेखक के 'समता' संबंधी विचारों की व्याख्या कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर समता को लोकतांत्रिक समाज का नियामक सिद्धांत मानते हैं।
- प्राकृतिक या अर्जित भिन्नताओं के बावजूद जन्म और सामाजिक विरासत के कारण अवसरों में भेदभाव उचित नहीं है।

चरण 1: समता का आशय समझिए मनुष्यों की शारीरिक क्षमता, सामाजिक विरासत और व्यक्तिगत प्रयत्न समान नहीं होते। आंबेडकर इन वास्तविक भिन्नताओं को स्वीकार करते हुए भी उन्हें असमान व्यवहार का औचित्य नहीं मानते। जन्म और वंश से प्राप्त विशेष सुविधाएँ प्रतियोगिता को पहले ही असमान बना देती हैं। इसलिए सामाजिक व्यवस्था को सबके विकास का समान आधार देना चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आंबेडकर के अनुसार मनुष्यों की क्षमताएँ और सामाजिक परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं, फिर भी सबको समान व्यवहार तथा विकास के समान अवसर मिलने चाहिए। जन्म, जाति और वंश के विशेषाधिकार अनुचित हैं। समता लोकतंत्र का नियामक सिद्धांत है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता विकसित करे।

चरण 3: निष्कर्ष समता का अर्थ सबकी क्षमता एक जैसी मानना नहीं, बल्कि भेदभाव मिटाकर विकास के समान अवसर देना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्राकृतिक भिन्नता और अवसरों की समानता का भेद स्पष्ट करें तथा जाति के विशेषाधिकार का विरोध जोड़ें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी के अंतर्विरोधों को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। इस प्रकार के अंतर्विरोधों को किस प्रकार कम किया जा सकता है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू के पारंपरिक संस्कारों और उनके परिवार की आधुनिक जीवनशैली का टकराव दिखाई देता है।
- कहानी के प्रसंगों से मतभेद स्पष्ट करके पारस्परिक सम्मान तथा संवाद के व्यावहारिक उपाय देने चाहिए।

चरण 1: पुरानी पीढ़ी का दृष्टिकोण पहचानिए यशोधर बाबू किशनदा से मिले संस्कारों और सादे जीवन को महत्त्व देते हैं। उन्हें सामाजिक संबंध, परंपरा और मर्यादा प्रिय हैं। वे बदलते समय की उपभोक्तावादी जीवनशैली के साथ सहज नहीं हो पाते। उनकी असहजता को केवल पिछड़ापन कह देना उनके अनुभवों और मूल्यों की उपेक्षा करना होगा।

चरण 2: नई पीढ़ी और टकराव के प्रसंग समझिए परिवार के युवा सदस्य आधुनिक पहनावे, सुविधाओं और नए ढंग से उत्सव मनाने में विश्वास रखते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित समारोह यशोधर बाबू को अपरिचित लगता है। बेटे का दिया ड्रेसिंग गाउन भी दोनों पीढ़ियों की जीवनशैली की दूरी दिखाता है। पत्नी का बच्चों की ओर झुकाव उन्हें और अकेला महसूस कराता है।

चरण 3: मतभेद कम करने के उपाय निर्धारित कीजिए नई पीढ़ी को बुजुर्गों के अनुभव, भावनाओं और स्वतंत्र पसंद का आदर करना चाहिए। पुरानी पीढ़ी को भी हर परिवर्तन का विरोध करने के स्थान पर उपयोगी नई बातों को समझना चाहिए। साझा निर्णय, खुला संवाद और स्नेहपूर्ण सहभागिता से उत्सव तथा पारिवारिक जीवन सबके लिए सुखद बन सकते हैं।

चरण 4: लगभग 100 शब्दों में उत्तर 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू सादगी, परंपरा और किशनदा से मिले संस्कारों के पक्षधर हैं, जबकि उनके बच्चे आधुनिक रहन-सहन, सुविधाओं और उत्सवप्रियता को महत्त्व देते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का समारोह उन्हें असहज करता है। बेटे का ड्रेसिंग गाउन देना भी जीवनशैली का अंतर दिखाता है। पत्नी का बच्चों के साथ बदलना उनके अकेलेपन को बढ़ाता है। इन अंतर्विरोधों को संवाद, सहानुभूति और पारस्परिक सम्मान से घटाया जा सकता है। युवा बुजुर्गों के अनुभवों तथा भावनाओं का आदर करें और बुजुर्ग उपयोगी परिवर्तनों को स्वीकारें। पारिवारिक निर्णयों में सबकी भागीदारी संबंधों में निकटता ला सकती है।

चरण 5: निष्कर्ष पीढ़ियों का अंतर तभी कम होगा जब परंपरा के उपयोगी मूल्यों और आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के बीच संवाद तथा सम्मान बना रहे।

त्वरित सुझाव: कहानी के दो ठोस प्रसंगों से अंतर्विरोध दिखाइए और अंत में दोनों पीढ़ियों की जिम्मेदारी बताते हुए उपाय लिखिए।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए सारे गाँव भर में आनंदा के पिता का कोल्हू सबसे पहले क्यों चलता था ? गाँव के बाकी किसानों का इस विषय में क्या मत था ? आपकी दृष्टि में दोनों में से किसकी सोच अधिक महत्त्वपूर्ण और उचित है और क्यों ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंदा के पिता की कृषि-संबंधी सोच को उनके आर्थिक उद्देश्य और अन्य किसानों के व्यावहारिक अनुभव के संदर्भ में समझना आवश्यक है।
- तर्कपूर्ण मूल्यांकन में तत्काल मिलने वाले ऊँचे भाव की तुलना फसल की परिपक्वता, कुल उत्पादन और दीर्घकालीन लाभ से की जाती है।

चरण 1: पिता और गाँव के किसानों के विचारों का अंतर आनंदा के पिता बाजार में पहले गुड़ पहुँचाकर उसका अधिक मूल्य प्राप्त करना चाहते थे। इसलिए उनके यहाँ कोल्हू गाँव के अन्य कोल्हुओं से पहले चलने लगता था। उनका ध्यान शुरुआती बाजार के ऊँचे भाव पर केंद्रित था। इसके विपरीत अन्य किसानों का विचार था कि गन्ने को खेत में पूरा पकने का समय देना चाहिए। समय से पहले काटने पर गन्ने में पर्याप्त रस और मिठास नहीं आती, इसलिए उससे गुड़ भी अपेक्षाकृत कम बनता है। इस प्रकार अधिक भाव मिलना और कुल लाभ अधिक होना एक ही बात नहीं है। उचित निर्णय के लिए यह भी देखना होगा कि उतने ही खेत और श्रम से कितना तैयार गुड़ प्राप्त होगा। किसानों का मत फसल के स्वाभाविक विकास और अनुभव पर आधारित था।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'जूझ' में आनंदा के पिता का कोल्हू सबसे पहले चलता था, क्योंकि वे आरंभ में गुड़ बेचकर बाजार का ऊँचा भाव प्राप्त करना चाहते थे। गाँव के अन्य किसान इसे उचित नहीं समझते थे। उनके अनुसार गन्ना पूरी तरह पकने पर ही काटना चाहिए, क्योंकि अधपके गन्ने से रस और गुड़ कम निकलते हैं। मेरी दृष्टि में अन्य किसानों की सोच अधिक उचित है। खेती में केवल बिक्री का भाव नहीं, उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता भी महत्त्वपूर्ण हैं। परिपक्व फसल से अधिक उपज मिलती है; इसलिए तत्काल अधिक मूल्य पाने के लोभ में फसल जल्दी काटना दूरदर्शिता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता पहले गुड़ बेचकर ऊँचा भाव पाना चाहते थे, जबकि अन्य किसान गन्ने की पूर्ण परिपक्वता के पक्षधर थे। उत्पादन और गुणवत्ता को महत्त्व देने वाली किसानों की सोच अधिक संतुलित एवं उचित है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले कोल्हू जल्दी चलाने का कारण, फिर किसानों का मत और अंत में उत्पादन तथा गुणवत्ता पर आधारित अपना तर्क लिखिए।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

"मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं, दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं।" पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी नगर के नियोजित होने का प्रमाण उसकी सड़कों, आवासों, जल-व्यवस्था और सार्वजनिक निर्माण के सुव्यवस्थित संबंध से मिलता है।
- 'अतीत में दबे पाँव' में पुरातात्त्विक अवशेषों के आधार पर सिंधु सभ्यता की नगर-योजना और नागरिक दृष्टि का परिचय मिलता है।

चरण 1: पाठ से नगर-योजना के प्रमाण चुनना उत्तर का आधार केवल इन नगरों की प्राचीनता नहीं, बल्कि उनकी व्यवस्थित बसावट है। सीधी सड़कें और उनसे जुड़ी गलियाँ, निश्चित योजना से बने पक्की ईंटों के घर तथा आँगन और स्नानस्थल सुविचारित आवास-व्यवस्था दिखाते हैं। घरों का पानी नालियों से निकलता था और नालियों को ढकने की व्यवस्था थी। कुएँ जलापूर्ति का साधन थे। मुअनजो-दड़ो का विशाल सार्वजनिक स्नानागार सामुदायिक जीवन तथा जल-प्रबंधन के प्रति सजगता का प्रमाण है। इन ठोस पुरातात्त्विक अवशेषों से स्पष्ट है कि निर्माण केवल व्यक्तिगत सुविधा के लिए नहीं हुआ था; पूरे नगर के निवासियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया था।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा की सुव्यवस्थित बसावट उनके प्राचीन नियोजित नगर होने की पुष्टि करती है। चौड़ी, सीधी सड़कें और उनसे जुड़ी गलियाँ नगर-योजना का परिचय देती हैं। पक्की ईंटों के घरों में आँगन तथा स्नानस्थल थे। घरों से जल निकासी के लिए नालियाँ थीं, जो बड़ी नालियों से जुड़ती थीं। ढकी हुई नालियाँ स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती हैं। कुओं से जलापूर्ति होती थी। मुअनजो-दड़ो का विशाल स्नानागार सार्वजनिक निर्माण का उल्लेखनीय उदाहरण है। आवास, यातायात, पानी और सफाई की ऐसी समन्वित व्यवस्था सिद्ध करती है कि ये नगर सोच-समझकर बसाए गए थे और उनकी नागरिक संस्कृति अत्यंत विकसित थी।

चरण 3: निष्कर्ष सुनियोजित सड़कें, पक्के मकान, जलापूर्ति, जल निकासी और सार्वजनिक स्नानागार जैसे प्रमाण इन नगरों की प्राचीन तथा विकसित नगर-योजना को पुष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: कथन की पुष्टि के लिए केवल प्राचीनता न लिखें; सड़क, आवास, जलापूर्ति और सफाई की व्यवस्था को नियोजन के प्रमाणों से जोड़ें।